शाश्वत अंधकार के बंधन

लूका 8:30–33

“यीशु ने उससे पूछा, ‘तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने उत्तर
दिया, ‘मेरा नाम लेजियन है, क्योंकि कई बुरे आत्माएँ उसमें प्रवेश कर चुकी हैं।’
वे उससे विनती करने लगे कि उन्हें अबादोन (Shimoni) में न
भेजे।
उस पहाड़ी पर एक बड़ी सूअर की झुंड थी। बुरे आत्माओं ने उससे कहा कि उन्हें सूअरों में जाने की अनुमति दी जाए, और उसने अनुमति दे दी।
फिर वे मानव से बाहर निकलीं और सूअरों में चली गईं; और झुंड पहाड़ी से नदी में गिरकर डूब गया।”

शालोम! प्रिय परमेश्वर के बच्चों,
आज प्रभु ने हमें फिर से अपनी कृपा दी कि हम उसके प्रकाश को देखें। सारी महिमा और गौरव अनंत काल तक उसी को जाए। आइए हम आज हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवित वचन को ध्यानपूर्वक देखें। हम उस घटना पर ध्यान देंगे जब यीशु उस व्यक्ति से मिले जो शैतानों से ग्रसित था, और यह घटना तब हुई जब वे गलील का सागर पार कर चुके थे।

सबसे पहले ध्यान देने योग्य बात यह है कि शैतान ने सबसे पहले

क्या किया: उन्होंने प्रभु से विनती की कि उन्हें “शिमोनी” (Abadon) भेजा न जाए। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है: क्यों शिमोनी? और यह स्थान वास्तव में कहां है?

स्पष्ट है: ये शैतान उस स्थान को अच्छी तरह जानते थे। भले ही वे शारीरिक रूप से वहां उपस्थित न थे, लेकिन वे वहां की कठिनाइयों को जानते थे। इसलिए उनका पहला काम—जिस व्यक्ति से वे मिले थे, और जिसे वे जानते थे—जल्दी ही समर्पण करना और शांति मांगना था, ताकि वे और बड़े संकट में न फंसें।

उदाहरण:
अगर कोई स्वस्थ व्यक्ति यह चुनाव करे कि वह वीरान जंगल में जाए या युद्ध-ग्रस्त मोगादिशु, सोमालिया में, तो वह स्वाभाविक रूप से जंगल को चुनेगा। या तो इसलिए कि उसने दोनों स्थानों को जाना है और जंगल अधिक सुरक्षित है, या इसलिए कि वह मोगादिशु के अराजकता के बारे में जानता है।

ठीक इसी तरह, ये शैतान शिमोनी की वास्तविकता से परिचित थे—वहां की कठिनाइयां, पीड़ा और यातनाएं—या तो इसलिए कि वे वहां गए थे, या उन्होंने वहां दूसरों को पीड़ित होते देखा था। इसलिए वे वहां लौटना नहीं चाहते थे।

2 पतरस 2:4

“क्योंकि परमेश्वर ने जो स्वर्गदूत पाप किए थे उन्हें नहीं बख्शा, परन्तु उन्हें अंधकार के गहरे पिंड में गिरा दिया और बंधन में बाँध दिया, ताकि उन्हें न्याय के लिए सुरक्षित रखा
जा सके।”

यह स्पष्ट करता है कि जो स्वर्गदूत परमेश्वर के आदेशों का उल्लंघन करते हैं, उन्हें शिमोनी में फेंक दिया गया, बांध दिया गया और अंतिम न्याय की प्रतीक्षा में रखा गया। जैसे हम जानते हैं, जो व्यक्ति गहरे गर्त में गिरता है, वह निराशा में फंस जाता है—उसी तरह ये विद्रोही स्वर्गदूत भी शाश्वत अंधकार में हैं। कुछ अभी भी पृथ्वी पर सक्रिय हैं, अपने नेता शैतान के साथ। समय आने पर वह भी 1000 वर्षों के लिए इस गर्त में फेंक दिया जाएगा, फिर थोड़ी अवधि के लिए मुक्त किया जाएगा, ताकि पृथ्वी पर अंतिम उद्देश्य को पूरा कर सके, और अंत में आग की झील में फेंक दिया जाएगा।

प्रकाशितवाक्य 20:1–3

“और मैंने देखा कि एक स्वर्गदूत आकाश से उतरा, जिसके हाथ में गर्त की चाबी और एक बड़ी जंजीर थी।

उसने ड्रैगन, पुरानी सर्प, शैतान और दानव को पकड़कर 1000
वर्षों के लिए बांध दिया।
और उसे गर्त में फेंक दिया, उसे बंद कर दिया और उस पर मुहर
लगा दी, ताकि वह लोगों को और बहकाने न पाए, जब तक हजार वर्ष पूर्ण न हो जाएँ। उसके बाद उसे थोड़ी देर के लिए मुक्त किया जाएगा।”

तो, जो शैतान अभी तक शिमोनी में नहीं हैं, वे कहां हैं? वे पृथ्वी पर शांति की तलाश करते हैं—किसी मानव शरीर में। शरीर के बाहर वे पीड़ा, दुःख और कष्ट में रहते हैं। जब कोई शैतान किसी मानव से निकलता है, बिना तुरंत कोई दूसरा स्थान पाए, तो वह “सूखे” रेगिस्तान में भटकता है—आध्यात्मिक दृष्टि से—आराम की तलाश में, जैसा कि मत्ती 12:43–45 में कहा गया है:

“जब अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य से निकलती है, वह पानी रहित स्थानों में घूमती है, आराम पाने के लिए, और वह नहीं पाती। फिर वह कहती है, ‘मैं अपने घर लौटूंगी, जहाँ से मैं निकली थी।’ और वह पाती है कि घर खाली, झाडू से साफ और सजाया हुआ है। फिर वह वहां जाकर सात और आत्माओं को साथ ले आती है, जो उससे भी अधिक बुरी होती हैं, और वे उसमें प्रवेश कर जाते हैं। यही इस बुरे युग का परिणाम होगा।”

इसका अर्थ है: जो व्यक्ति अपने शरीर को शैतानों के लिए छोड़

देता है, बिना यीशु को स्वीकार किए, वह उन आत्माओं के लिए निवासस्थान बन जाता है। हर प्रकार का पाप—व्यभिचार, मूर्तिपूजा, जादू—मनुष्य को शैतानों के लिए सुरक्षित जगह बनाता है। जो महिलाएं लापरवाही से कपड़े पहनती हैं, वे भी बुरी आत्माओं का निवासस्थान बन जाती हैं। ऐसा जीवन जीने वाले लोग मृत्यु के समय सीधे अंधकार में फेंके जाते हैं, सडोम, गोमोरा और नूह के समय के लोगों के साथ।

पुराने नियम में, पीड़ित व्यक्ति के लिए न्याय मृत्यु थी:

लेवीयक 20:26–27

“तुम मेरे लिए पवित्र रहो, क्योंकि मैं, यहोवा, पवित्र हूँ।
कोई भी पुरुष या महिला जो शैतान से ग्रसित हो या जादू करता
हो, उसे मार दिया जाए; पत्थरों से मार दिया जाए। उनका रक्त
उन पर हो।”

इसलिए हमें प्रतिदिन सावधान रहना चाहिए कि हम अपने शरीर को शैतानों के लिए निवास न बनाएं। इसके बजाय, पवित्र आत्मा को हमारे जीवन को भरने दें।

Share on:
WhatsApp

Print this post